जूनियर आर्टिस्ट भर्ती फ़ॉर्म

देबाश्री मुखर्जी

6 जनवरी 2005

जूनियर आर्टिस्ट उद्योग के बारे में मेरी दिलचस्पी नीले काग़ज़ के एक छोटे-से पुर्ज़े से पैदा हुई थी। मैं दिलीप नामक एक एसोसिएट डायरेक्टर (एडी) से बात कर रही थी। बातचीत इस बारे में थी कि मैंने किन-किन लोगों से साक्षात्कार लिए हैं और क्या तस्वीर सामने आयी है। इसी बातचीत के दौरान दिलीप ने मुझे 'जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन' द्वारा जारी किया गया एक 'भर्ती आदेश' दिखाया। काग़ज़ को अच्छी तरह तह करके रखा गया था मगर उसका आधा हिस्सा ग़ायब था क्योंकि दिलीप ने उस पर फ़ोन नंबर लिख कर किसी को दे दिया था। किंतु इस आधे काग़ज़ में भी जो कुछ मैं पढ़ पायी उसी से मेरे अंदर एक नयी बेचैनी पैदा हो गयी और मैं इस पूरे फ़ॉर्म को ढूँढने निकल पड़ी ...।

मैं महीनों से "जॉनी जॉनी येस पापा" में कार्यरत् जूनियर आर्टिस्ट कोऑर्डिनेटर श्री सूरी से संपर्क करने की कोशिश कर रही थी। मैं जब भी संपर्क करती या तो वह मसरूफ़ पाए जाते या शहर में नहीं होते थे। श्री सूरी से किसी भी तरह संपर्क नहीं हो पा रहा था इसलिए मैंने सीधे 'जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन (जेएए)' के दफ़्तर में जाने का फ़ैसला किया। मुझे जो काग़ज़ का टुकड़ा मिला था उस पर 549-बी, हरिकृष्ण कुंज, महालक्ष्मी का पता लिखा हुआ था। मैं इस पते पर पहुँची तो वहाँ एक जीर्ण-शीर्ण बंगला मेरे सामने था। बंगले की बनावट बीसवीं शताब्दी के शुरुआती औपनिवेशिक शहरी स्थापत्य से मिलती-जुलती दिखायी देती थी मगर अब उसके खंभे चरमराने लगे थे। बंगले के कमरों में कई 'टेलर मास्टर' और परचूनिए डेरा जमाए बैठे थे। 'जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन' का वहाँ कोई अता-पता नहीं था। नुक्कड़ पर पान की दुकान चलाने वाले आदमी से मैंने इस बारे में पूछा तो उसने बताया कि कुछ माह पहले यह दफ़्तर अचानक बंद हो गया था। अब यह दफ़्तर कहाँ है उसे कुछ पता नहीं था।

नया पता हासिल करने के लिए कई नाकामयाब कोशिशों के बाद मैंने रवि दादा से संपर्क साधा।

उन्होंने मुझे एक और जूनियर आर्टिस्ट कोऑर्डिनेटर का फ़ोन नंबर दे दिया। इस कोऑर्डिनेटर का नाम मधु था (श्री सूरी चेन्नई में थे और उनका फ़ोन मिल नहीं पा रहा था। इंटरनेट पर भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पायी सिवाय इसके कि स्क्रीन के लेखों में यहाँ-वहाँ जूनियर आर्टिस्ट्स का ज़िक्र था)। अब एक अजीबोग़रीब बातचीत शुरू हुई। जब मैंने फोन मिलाया तो दूसरी तरफ़ से एक बेहद शंकालु क़िस्म के आदमी की आवाज़ आयी। वह मधु जी से बात कराने को बिल्कुल तैयार नहीं था। जब मैंने उसे बताया कि मुझे यह नंबर रवि राजपूत से मिला है और मैं जेएए का पता या फ़ोन नंबर जानना चाहती हूँ तो मुझे एक और आवाज़ सुनायी दी। शायद यह मधु की आवाज़ थी जिन्होंने उसे कहा कि वह फ़ोन काट दे। लेकिन जब मैंने उसे बताया कि मैं जूनियर आर्टिस्ट्स पर रिसर्च कर रही हूँ तो वह थोड़ा सामान्य हो गया।

उसने बड़ी दिलचस्पी से बताया कि एक ज़माने में वह 'फ़ेडरेशन ऑफ़ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉईज़ (एफ़डब्ल्यूआईसीई)' का कार्यकारी सचिव रह चुका है मगर हाल ही में उसने 'कुछ प्रशासकीय मतभेदों' के सवाल पर एक 'कठोर इस्तीफ़ा' दे दिया था। "मेरी राय मानें तो आप दफ़्तर में बतायी जाने वाली चीज़ों पर क़तई यक़ीन न करें। पीछे भी बहुत सारी छात्र-छात्राएँ जूनियर आर्टिस्ट्स के बारे में अपने रिसर्च के सिलसिले में मुझसे बात कर चुकी हैं। लेकिन ये लोग अंदर की हालत देखना ही नहीं चाहते। वह संस्था में आला अफ़सरों की भीतरी सियासत को जानने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। वह इस बात को समझने के लिए तैयार नहीं हैं कि योग्यता के नए नियमों की वजह से सात सौ कलाकारों की रोज़ी-रोटी छिन जाएगी, ...हमारी ज़िन्दगी में कितने दर्द और तकलीफ़ हैं ... मेरे पास आपका नंबर आ गया है। मैं जल्दी ही आपसे संपर्क कर लूँगा।" और उसने फ़ोन रख दिया।

मुझे 'एफ़डब्ल्यूआईसीई' से नया पता मिल गया। मगर इसमें फ़ोन नंबर नहीं था। 'एफ़डब्ल्यूआईसीई' असल में 'जेएए' जैसी बाइस एसोसिएशनों का एक महासंघ है। इसमें महिला कलाकार एसोसिएशन जैसे संगठन भी शामिल हैं जो केवल महिला कलाकारों को सदस्यता देते हैं। मुझे जो पता मिला वह काफ़ी आधा-अधूरा-सा था : गली नंबर 3, नवलकर वाड़ी, जोगेश्वरी (ईस्ट)। इस पते पर पहुँचने के लिए यहाँ-वहाँ लगे छोटे-छोटे सब्ज़ी और मछली बाज़ारों को पार करके जाना पड़ता था। और मालूमात लेने पर आख़िर में मुझे छोटे-छोटे पतरों और गोदामों की एक क़तार की तरफ़ भेज दिया गया। इन्हीं में से एक कमरे के बाहर 'जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन' का नया-नया बोर्ड लटका हुआ था। मैंने अंदर झाँका तो वहाँ तक़रीबन बारह बाई तीस फ़ीट का एक बड़ा-सा हॉल दिखा। हॉल में सफ़ेद स्टील की बेंचें पड़ी थीं। बारह क़तारों में रखी इन बेंचों का रुख़ दरवाज़े की तरफ़ था। दाहिने कोने में दो केबिन बनाए गए थे जिनमें दो आदमी समा सकते थे – एक बैठा और एक खड़ा।

हॉल खाली था। मुझे लगा कि दो सौ मीटर के दायरे में वहाँ मैं अकेली औरत थी। एक नाक़ाबिले शिनाख़्त मगर तेज़तर्रार नेटवर्क की मेहरबानी से भरत नाम का झाड़ू वाला मेरी मौजूदगी से वाक़िफ़ हो चुका था। उससे मुझे पता चला कि 'सब लोग' एसोसिएशन के सालाना चुनाव के लिए अंधेरी गए हुए हैं। दीवारों पर तरह-तरह के पोस्टर लगे थे जिन पर सदस्यों से वोट देने का आह्वान किया गया था। मतपत्र पर ठप्पा लगाने के लिए जिस मोहर का इस्तेमाल किया गया था वह किसी की नज़र से छिप नहीं सकती थी – नाज़ियों का स्वास्तिक वाला चिह्न! तक़रीबन चौदह साल के भरत ने मुझे बताया कि वैसे तो वह फूलों की एक दुकान में काम करता है, मगर जब-तब इधर-उधर के काम भी कर लेता है। आज उसे अगले दिन होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह के लिए रोशनी का इंतज़ाम करने के लिए बुलाया गया है। मगर उसे इस बात का इल्म नहीं था कि ये सारी गहमागहमी किसलिए होती है। उसे लग रहा था कि अगले दिन लक्ष्मी पूजा या कोई ऐसा ही त्यौहार होने वाला है। उसी ने मुझे बताया कि यह दफ़्तर कुछ ही माह पहले खुला था। पहले यहाँ तबेला हुआ करता था।

इसके बाद मैं भर्ती (रिक्वीज़िशन) पुस्तक ढूँढने लगी। जब मुझे यह रजिस्टर मिल गया तो मैंने चुपचाप उसमें से एक फ़ॉर्म फाड़ लिया। भरत की हिदायत बस इतनी थी – "पता नहीं चलना चाहिए कि कुछ फाड़ा है!"

मुझे जो फ़ॉर्म मिला वह यह था :

जूनियर आर्टिस्ट्स एसोसिएशन

(पंजीकरण संख्या 2892, ट्रेड यूनियन अधिनियम 1926 – एफ़डब्ल्यूआईसीई से संबद्ध)

भर्ती ऑर्डर

सिने एजेंट का नाम मेसर्स : .....

पिक्चर/सीरियल का नाम : .....

ज़रूरत कहाँ पर है : .....

इंडोर/लोकल, आउटडोर/आउट स्टेशन/रिपोर्टिंग तारीख़ : .....

विशेष निर्देश, अगर कोई हो तो : .....

शिफ़्ट टाईम : प्रातः 7 बजे/ प्रातः 9 बजे/ शाम 2.30 बजे/ शाम 7 बजे/ शाम 9.30 बजे।

जूनियर आर्टिस्ट्स के नाम : .....

डीसेंट वर्ग :

1.

2.

3.

4.

5.

बी-श्रेणी :

1.

2.

3.

4.

सिने एजेंट के हस्ताक्षरः फ़ील्ड ऑफ़िसर/सर्कल इंस्पेक्टर के हस्ताक्षर

कुल तस्दीक़शुदा बोर्ड : .....

समय : .....

तारीख़ : .....

फ़ॉर्म की मोटा-मोटी रूपरेखा यही थी। 'डीसेंट' और 'बी-श्रेणी' जैसे शब्दों के अलावा फ़ॉर्म के

पिछली तरफ़ वेतन की भी एक बड़ी अजीबोग़रीब और आकर्षक फ़ेहरिस्त दी गयी थी। यहाँ मैं कुछ दिलचस्प पहलुओं को जस का तस आपके सामने पेश कर रही हूँ :

एएमपीटीपीपी तथा एफ़डब्ल्यूआईसीई, मुंबई के बीच स्वीकृत समझौता, 21.8.1997

व्यक्ति को मिलने वाला मूल वेतन

(01.01.2001 से 31.12.2001)

श्रेणी प्रति शिफ़्ट रुपए

डीसेंट : 430 रुपए

बी-श्रेणी : 322 रुपए

प्रचलित भत्ता

लंच का पैसा : 38 रुपए दोपहर 12.00 बजे (प्रात: 9/9.30 की शिफ़्ट में)

यात्रा भत्ता : 39 रुपए अनिवार्य + मैड जेटी कनवेंस[1] 20 रुपए

आउट स्टेशन आउटडोर के लिए 94 रुपए लंच और 148 रुपए यात्रा भत्ता। होली के दृश्य या गीले/सूखे दृश्यों में इस्तेमाल होने वाली प्रत्येक अतिरिक्त या निजी पोशाक[2] के लिए धुलाई की क़ीमत 30 रुपए।

गाने (होंठों की गति/होली सूखा/गीला/बरसात का दृश्य) : आधी शिफ़्ट के वेतन का अतिरिक्त भुगतान।

विशेष मेकअप और गेटअप : पूरे शरीर पर तेल/कोई भी रंग/ख़ून/सूखा/गीला[3] – एक पूरी शिफ़्ट का अतिरिक्त वेतन। अगर यही चीज़ें सिर्फ़ चेहरे पर लगायी गयी हैं तो आधी शिफ़्ट का अतिरिक्त वेतन।

दाढ़ी : एक शिफ़्ट

विग : आधा शिफ़्ट

संवाद रहित छोटी भूमिकाओं के लिए : हनुमान, पुजारी (पंडित) आदि के लिए आधी शिफ़्ट का वेतन।

विशेष कार्य : तैरने/मोटरसाइकिल चलाने/घुड़सवारी के लिए एक शिफ़्ट का अतिरिक्त वेतन।

साइकिल चलाने और देह दिखाने के लिए आधी शिफ़्ट का वेतन।[4]

डुप्लिकेटिंग : अगर किसी डीसेंट/बी-श्रेणी जूनियर आर्टिस्ट से डुप्लिकेट के रूप में काम कराया जाता है तो उसे हीरो/हीरोइन/विलेन के डुप्लिकेट की भूमिका करने के लिए प्रति शिफ़्ट 690 रुपए दिए जाएँगे। अन्य पात्रों के डुब्लिकेट की भूमिका निभाने के लिए 625 रुपए प्रति शिफ़्ट मिलेंगे।

मारधाड़ और नाच-गाने : फ़ाइट मास्टर या डाँस मास्टर के निर्देशानुसार जूनियर आर्टिस्ट्स को फ़ाइटर या डाँसर को मिलने वाला वेतन मिलेगा। अगर यही काम निर्देशक की देख-रेख में किया जाएगा तो जूनियर आर्टिस्ट्स को आधी शिफ़्ट का अतिरिक्त वेतन मिलेगा।

हर चार घंटे के बाद अनिवार्य अवकाश : आदि-आदि।

इस दस्तावेज़ की एहतियात से जाँच करना ज़रूरी है। इन प्रावधानों के पीछे कई कामयाब और नाकामयाब लड़ाइयों का इतिहास छिपा हुआ है। ये लड़ाइयाँ मूल अधिकारों के लिए, तर्कसंगत कार्यपरिस्थितियों के लिए, प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान के लिए लड़ी गयी हैं।

जूनियर आर्टिस्ट हिंदी फ़िल्मों में आमतौर पर स्थूल-सी भूमिकाएँ निभाते हैं। इन भूमिकाओं में अकसर संवाद की भी ज़रूरत नहीं होती। पेशेवर, प्रशिक्षित अभिनेता ऐसी भूमिकाओं को अपनी हैसियत से कम मानते हैं या फिर बेहिसाब पैसा लेते हैं। हवलदार, जज, फ़ादर, सरदारजी, भिखारी, बिज़नेसमैन, बाई आदि भूमिकाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। जैसा कि इस फ़ॉर्म से पता चलता है, 'पुजारी' और हनुमान की भूमिकाएँ हिंदी फ़िल्मों में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होती हैं – तभी तो फ़ॉर्म में उनका ख़ास तौर से ज़िक्र किया गया है! (कई जूनियर आर्टिस्ट्स एक ही भूमिका निभाने के लिए मशहूर हो चुके हैं।)

इन किरदारों को निभाने के लिए अभिनय दक्षता की ज़रूरत तो नहीं होती, मगर ये भूमिकाएँ कलाकारों के लिए भारी ज़रूर पड़ती हैं। भारी-भरकम, खुजलीदार दाढ़ियों, घटिया मेकअप या नक़ली ख़ून में लथपथ घंटों धूप में पड़े रहना या लाश की तरह लेटे रहना आसान काम नहीं होता। लोकेशन पर बड़े-बड़े सितारों के आगे-पीछे तो कुर्सी, छतरी और जूस लेकर स्पॉट ब्वॉयज़ की फ़ौज घूमती है मगर जूनियर आर्टिस्ट्स के पास ऐसी कोई सुविधा नहीं होती। उन्हें तो हर समस्या का हल ख़ुद ही ढूँढना पड़ता है।

जूनियर आर्टिस्ट्स को भीड़ के तौर पर या पृष्ठभूमि में भीड़ दिखाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। आम तमाशबीनों के तौर पर खड़े होकर ये कलाकार कहीं तालियाँ बजाते हैं, कहीं हमदर्दी जताते हैं, कहीं शोर मचाते हैं, तो कहीं शर्म का इज़हार करते हैं। इस तरह ये कलाकार फ़िल्म के काल्पनिक पात्रों के अनुभवों को एक विश्वसनीयता दे देते हैं। वह बेआवाज़, बेनाम रहते हुए आम आदमी का किरदार अदा करते हैं।

जूनियर आर्टिस्ट्स को 'बैकग्राउंड आर्टिस्ट्स' के रूप में अलग से जाना जाता है। बैकग्राउंड जूनियर आर्टिस्ट्स के तौर पर काम करने वाले कलाकार दृश्य में मुख्य पात्रों के इर्द-गिर्द हो रही अन्य गतिविधियों को अंजाम देते हैं। ये कलाकार ही किसी दृश्य को सेट के बाहर की असली दुनिया का 'एहसास' देते हैं। उनकी मौजूदगी से दृश्य में कई समानांतर कहानियाँ और दृश्य पैदा हो जाते हैं। मान लीजिए कि हीरो अपने बाप की मौत पर रोता-पीटता समंदर के किनारे चला जा रहा है। उसी समय एक अनजाना जोड़ा बैकग्राउंड में नारियल पानी पी रहा है जबकि कुछ बूढ़े शाम को चहलक़दमी करते हुए हीरो के सामने से गुज़र जाते हैं। ये काम बैकग्राउंड आर्टिस्ट्स के ज़िम्मे आते हैं।

मैं जल्दी ही समझ गयी कि फ़िल्म उद्योग, उसके तरतम ढाँचे और परंपराओं के इस अनजाने से दायरे में भी एक से एक कहानियाँ और इतिहास बिखरे पड़े हैं। अगली कुछ कोशिशों में मैं इस फ़ॉर्म के ज़रिए थोड़ा और आगे बढ़ूँगी।

संदर्भ:

1 मड आइलैंड जाने के लिए इस्तेमाल होने वाली लॉन्चेज़ को मैड जेटी कहा जाता है। मड

आइलैंड शूटिंग के लिए एक सस्ती और लोकप्रिय जगह है।

2 जूनियर आर्टिस्ट्स से अकसर अपने कपड़े लाने के लिए कहा जाता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वह कम से कम तीन जोड़ी कपड़े ज़रूर लाएँ।

3 जैसा कि ज़ाहिर है, होली के दृश्य बॉलीवुड के लिए एक ज़रूरी ख़ुराक बन गए हैं जिनके लिए बहुत सारे जूनियर आर्टिस्ट्स की ज़रूरत पड़ती है। इन दृश्यों में कलाकार भीग जाते हैं और घंटों नुक़सानदेह रंगीन पाउडरों में लिपटे गीले खड़े रहते हैं।

4 हाल ही में टेलीविज़न की मशहूर अदाकारा निकी अनेजा गंभीर रूप से जख्मी हो गयी थीं। दुर्घटना तब हुई जब एक जूनियर आर्टिस्ट शूटिंग के लिए कार चला रहा था और कार निकी अनेजा पर चढ़ गयी। बाद में एक बातचीत में निकी अनेजा ने बताया कि उस दृश्य में ड्राइवर को एक ख़ास जगह पर पहुँचकर ब्रेक लगाने थे, मगर उसने ग़लती से एक्सीलरेटर पर ही पाँव रख दिया। उसे कार चलाना नहीं आता था। "उसे प्रोडक्शन टीम के एक आदमी ने चंद मिनट पहले ही फटाफट कुछ नुस्ख़े बताए थे ताकि पैसे बचाए जा सकें। अगर निर्माता कार चलाने में माहिर जूनियर आर्टिस्ट को लाता तो उसे हर शिफ़्ट के पन्द्रह सौ रुपए देने पड़ते।" इस अप्रशिक्षित व्यक्ति को कार में बिठाने से उसका एक तिहाई पैसा बच गया। जूनियर आर्टिस्ट्स अकसर इस तरह के हालात में फँस जाते हैं। इसीलिए यह ज़रूरी होता है कि जेए कोऑर्डिनेटर नए कलाकारों के साथ ख़ुद भी सेट्स पर जाए।